* ॐ *

गायत्री

उपदेष्टा ब्रह्मीभूत श्री स्वामी
परमानन्द जी महाराज।

संस्थापक

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी।

१००० गायत्री कुमारी कमला देवी
पुत्री मोरपंखवाला श्रीभगवद्भक्ति
आश्रम ने वितरणार्थ छपवाई।

मुद्रक तथा प्रकाशक
भूमानन्द ब्रह्मचारी
"भक्ति प्रेस" रेवाड़ी।

पूर्ण संख्या १६०००० संवत् २००६

* ॐ *

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

गायत्री मन्त्र में १ ॐ, २ भूः, ३ भुवः, ४ स्वः, ५ तत्, ६ सवितुः, ७ वरेण्यम्, ८ भर्गो, ९ देवस्य यह नौ नाम हैं। इन नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' उपासना है। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है। इसमें पांच अवसान हैं। "ओ३म्" यहां प्रथम अवसान है। 'भुर्भुवः स्वः' दूसरा, 'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्' तीसरा, 'भर्गो देवस्य धीमहि' चौथा, 'धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ'

यहां पांचवां अवसान है। प्रत्येक अनसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहरना चाहिये। ओं= सर्वव्यापक सबकी रक्षा करने वाला; भूः=सत्य स्वरूप; भुवः=चैतन्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप; स्वः = सुख स्वरूप; तत्=वह अनन्त परमात्मा; सवितुः=सबको उत्पन्न करने वाला; वरेण्यम्= ग्रहण करने योग्य, तारीफ के लायक; भर्गो= सब पापों को भर्जन-नाश करने वाला, शुद्ध तेजः स्वरूप; देवस्य=प्रकाश आनन्द के देने वाले दिव्य स्वरूप ऐसे परमात्मा का; धीमहि= हम सब ध्यान करते हैं; धियः=बुद्धियों को; यः = वह परमात्मा; नः = हमारी; प्रचोदयात्= धर्मार्थ काम मोक्ष में प्रेरणा करे, संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगावे और शुद्ध

बुद्धि प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है, अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग (इस्तेमाल) है।

यह गायत्री मन्त्र आदि मन्त्र है। अन्य मतों की तो बात ही क्या है वेद में भी इसके अतिरिक्त ऐसा कोई मन्त्र नहीं है जिसमें एक ही मन्त्र में भगवान की स्तुति उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हों। भगवान के भजन में पहले भगवान की स्तुति की जाती है, फिर उपासना ध्यान किया जाता है और पश्चात् भगवान से प्रार्थना की जाती है। गायत्री मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों हैं।

गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो हिन्दू मात्र के लिये एक मन्त्र हो सकता है। भगवान वेद में आज्ञा करते हैं "समानो मन्त्रः" 'कि तुम्हारा मन्त्र एक हो' अतः हिन्दूमात्र का एक गायत्री मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदो मताः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री त्रिपदो व्याहृतयस्तथा॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है।

एवं वेत्ति विजानाति गायत्रीं ब्राह्मणस्तु सः।
अन्यथा शूद्रधर्मा स्याद् वेदानामपि पारगः॥

इस प्रकार से जो गायत्री को जानता है वह ही ब्राह्मण है और जो नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों नहीं हो

शूद्र है।

या सन्ध्या सैव गायत्री द्विधा भूता व्यवस्थिता।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासितः॥

जो गायत्री है वही सन्ध्या है और जो सन्ध्या है वही गायत्री है। जिसने गायत्री की उपासना करली उसने विष्णु भगवान की उपासना करली।

गायत्री चैव वेदांश्च तुलया समतोलयन्।
वेदा एकत्र साङ्गास्तु गायत्री चैकतः स्थिता॥

गायत्री को और वेदों को तोला तो अकेली गायत्री षडङ्गों सहित चारों वेदों के बराबर हुई। अर्थात् गायत्री का एक जप षडङ्गों सहित चारों वेदों के जप के बराबर है।

गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः।

इसका नाम गायत्री इसीलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

गायत्री वेद की माता है, गायत्री पाप नष्ट करने वाली है गायत्री के अतिरिक्त भूलोक में तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और नहीं है।

मनु भगवान ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दश गुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्रगुणा फल देता है। लेटा लेटा, बैठा बैठा, डोलता फिरता जिस भी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके

जपने में किसी प्रकार का भी विधि निषेध नहीं है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्गधाम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र से प्रातः, मध्याह्न सायंकाल और अर्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये। नौ नामों से भगवान की स्तुति करे फिर "धीमहि" से भगवान् का इस प्रकार ध्यान करे।

"योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं सं जप"

कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाश स्वरूप पुरुष है वह मैं हूँ। फिर 'धियो यो नः प्रचोदयात्' से प्रार्थना करे। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण के देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान का प्रकाश होता है।